P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राष्ट्रीय चेतना में हिन्दी काव्य की भूमिका
(भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के विशेष संदर्भ में)

सियाराम मीणा
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बूंदी, राजस्थान

सारांश

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर देश की स्वतंत्रता प्राप्ति तक का हिन्दी साहित्य राष्ट्रीय चेतना की भावना से प्रादुर्भूत साहित्य है। साहित्य की सभी विद्याओं– कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं आदि सभी में राष्ट्रीय चेतना की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। लेकिन इन सभी विधाओं में राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से कविता का विशेष महत्व है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की क्रोड़ में विकसित राष्ट्रीय चेतना में मानवता का पोषण, स्वतंत्रता, समानता, न्याय और मानवीय समृद्धि की आकांक्षा तथा स्वाधीनता व राष्ट्र की प्रगति का मूल मंत्र निहित था। हिन्दी साहित्य में हम जिस राष्ट्रीय चेतना के दर्शन करते हैं, उसका स्वरूप व्यापक है।

अंग्रेजी दासता ने भारतीय जनमानस को प्रतिकार की भावना से भर दिया था। यद्यपि 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में भारत को पराजय का सामना करना पड़ा था। अंग्रेजों के 'अमानुषिक अत्याचारों से यह संग्राम दबा जरूर दिया गया था परंतु यही स्वतत्रंता देवी तक पहुंचाने वाला मार्ग भी बन गया था।' 1857 की क्रांति और उसकी असफलता ने भारतीय जनमानस की आँखें खोल दी थी कि हम क्या हैं, हम क्यों गुलाम हैं और हमारी मुक्ति का मार्ग क्या है? ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्राथना समाज, तत्वबोधिनी सभा, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी संस्थाओं के माध्यम से देश में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, बौद्धिक, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में एक नई चेतना का प्रदुर्भाव हुआ। एक ओर अंग्रेजों की दमनात्मक नीति और शोषण तेज हो रहा था, तो स्वाधीनता आन्दोलन में त्याग, बलिदान और आत्मोत्सर्ग की राह पर बढ़ रहा था। हिन्दी कविता ने भी स्वाधीनता आन्दोलन में पूरे जोश और उत्साह के साथ क्रांतिकारी भावनाओं को उद्वेलित करने वाली गजलों, कविताओं, मुक्तक काव्य, खण्ड काव्य व प्रबंध काव्यों की रचनाएं की। भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद व छायावादोत्तर युग में राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त करने वाले असंख्य कवियों की असंख्य कविताएं आज भी राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करने में समर्थ है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि कवियों ने अपनी कविताओं से युवाओं में देश के प्रति त्योग और समर्पण की भावना को उद्वलित किया था तथा देश के स्वाधीनता आन्दोलन में एक नयी तान छेड़ी। आज देश के सामने आन्तरिक सुरक्षा और बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से चुनौतियां कम नहीं है। भाषायी अलगाववाद,जातिवाद, भ्रष्टाचार, शोषण और विषमता, प्रान्तवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, वर्गवाद, धार्मिक कट्टरता आदि ऐसी चुनौतियां है जो भारत राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा, एकता, अखण्डता और समृद्धि के लिए घातक है। आज न केवल राष्ट्रीय भावना से युक्त काव्य के सृजन एवं तदनुकुल चेतना की आवश्यकता है बल्कि हमारे विगत का जो साहित्य है, जो स्वीधनता आन्दोलन में कदम–से–कदम मिलाकर चला उसके अध्ययन करने तथा प्रेरणा लेने का आवश्यकता; वह साहित्य समाज में राष्ट्रीय चेतना की अलख जगाने में समर्थ है।

मुख्य शब्द : स्वाधीनता, आन्दोलन, राष्ट्रीय भावना, चेतना, एकता व अखण्डता, त्याग, बलिदान, उत्सर्ग, समाज, उन्नति, हिन्दी कविता।

प्रस्तावना

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर देश की स्वतंत्रता प्राप्ति तक का हिन्दी साहित्य राष्ट्रीय चेतना की भावना से प्रादुर्भूत साहित्य है। साहित्य की सभी विद्याओं–काव्य, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं आदि सभी में राष्ट्रीय चेतना की व्यापक अभिव्यक्ति हुई। लेकिन सभी विधाओं में राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से कविता का विशेष महत्व है। भारतीय

स्वाधीनता आन्दोलन की होड़ में विकसित राष्ट्रीय चेतना में मानवता का पोषण, स्वतंत्रता, समानता, न्याय और मानवीय समृद्धि की आकांक्षा तथा स्वाधीनता व राष्ट्र की प्रगति का मूल मंत्र निहित था। हिन्दी साहित्य में हम जिस राष्ट्रीय चेतना के दर्शन करते हैं, उसका स्वरूप व्यापक है। उसमें केवल राजनीति या स्वाधीनता और स्वशासन ही नही अपितु देश की जातीय अस्मिता, सामाजिक,आर्थिक, भाषायी, सांस्कृतिक, दार्शनिक, बौद्धिक, ज्ञान–विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में उत्थान की भावना व कामना निहित है। सामान्यतः भौगोलिक एकता, जातीय एकता, भाषायी एकता, धर्मगत एकता, आर्थिक आकांक्षा विषयक एकता, सांस्कृतिक एकता, राजनीतिक आकांक्षा की एकता, इतिहास और लक्ष्य की समानता, संस्कृति और राष्ट्रीयता का अटूट संबंध[1] राष्ट्रीयता के तत्व माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य में निहित राष्ट्रीय भावना अत्यधिक व्यापक और विस्तृत है। इसमें राष्ट्रीय स्वाधीनता के साथ–साथ राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की भावना दिखाई देती है।

विषय का महत्व एवं उद्देश्य तथा साहित्य समीक्षा

स्वाधीनता आन्दोलन की होड़ में सृजित साहित्य देश की आजादी के संघर्ष एवं सफलता के विविध आयामों को उद्घाटित करने वाला साहित्य होता है। चाहे वह किसी भी देश का साहित्य हो। उसकी आकांक्षा और उद्देश्य महान होते हैं। भारत की स्वाधीनता के लिए लड़े गये संघर्ष में उत्सर्ग, त्याग और बलिदान की भावना के लिए देश की हर भाषा, लोक भाषा और क्षेत्रीय बोलियों में गीतों, लोक गीतों, कविता तथा काव्य की उत्कृष्ट रचनाएं हुई है। हिन्दी कविता उसके केन्द्र में है। क्योंकि आजादी की लड़ाई की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही रही है। जबकि आज देश में आंतरिक और बाह्य दृष्टि से अस्मिता व एकता और अखण्डता के लिए खतरा है। आतंकवाद, जातिवाद, धर्मांधता, साम्प्रदायिकता, कट्टरता, वर्गवाद, असहिष्णुता, अलगाववाद, भ्रष्टाचार, शोषण और विषमता, प्रान्तवाद, नक्सलवाद,, धार्मिक कट्टरता जैसी समस्याएं देश की एकता और अखण्डता के लिए खतरा पैदा कर रही है तो देश में भावनात्मक एकता, देश के प्रति त्याग और बलिदान की भावना, निहित स्वार्थों से उपर उठकर देश के लिए सोचने की आवश्यकता बराबर महसूस की जा रही है। आज निहित स्वार्थों के कारण व्यक्ति के मन–मानस से राष्ट्रीयता व सामूहिकता की सोच समाप्त होती जा रही है। आज देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उन्नति के लिए व्यक्तिगत स्वार्थों के स्थान पर राष्ट्रीय हितों को उपर रखने की आवश्यकता है। व्यक्ति के मन–मानस में राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करने के लिए उस साहित्य, विशेषकर उस कविता का अध्ययन आवश्यकता है, जो कवियों ने स्वाधीनता आन्दोलन के समय लिखी थी। हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा का शोधात्मक अनुशीलन करने वाली महत्वपूर्ण पुस्तकों में डॉ. भावुक की 1857 का स्वातन्त्र्य समर और हिन्दी काव्य, के. के. पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 2009), डॉ. शेखरचन्द्र जैन की राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला, जयपुर पुस्तक सदन, 1973, डॉ. सुभाष महाले की माखन लाल चतुर्वेदी और वि.दा.सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर, 1997, विद्यानाथ गुप्त की हिन्दी कविता की राष्ट्रीय भावना, 1966, डॉ. सुषमा नारायण की भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिन्दी कविता में अभिव्यक्ति, 1966, डॉ. देवराज शर्मा की हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा, 1979) आदि महत्वपूर्ण है जो हिन्दी काव्य की राष्ट्रीय भावना का शोधात्मक अनुशीलन करती है तथा इस दिशा में शोधार्थी का मार्ग दर्शन भी करती है। शोध–पत्र के माध्यम से हम उस उन कविताओं तथा कविता में निहित राष्ट्रीय भावना को उद्घाटित एवं विश्लेषित कर सकेंगे जिनको पढ़कर उस समय लोगों ने अपने व्यक्तिगत हितों को त्यागकर राष्ट्र के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था। यद्यपि राष्ट्रीय आन्दोलन की होड़ में सृजित साहित्य का शोधात्मक अनुशीलन विद्वानों ने किया है, लेकिन यह कार्य सातत्य की मांग करता है। इस पर जितना कार्य होगा, राष्ट्रीयता की भावना का उतना ही पोषण होगा। शोध पत्र के निष्कर्ष मौलिकता एवं नवीन विश्लेषण से युक्त करने का प्रयास किया है। शोध कर्ता की जानकारी के अनुसार विगत वर्षों में ऐसा कार्य नहीं हुआ है जिससे कि शोध में पिष्ट पोषण की संभावना हो।

हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना एवं भूमिका

अंग्रेजी दासता ने भारतीय जनमानस को प्रतिकार की भावना से भर दिया था। यद्यपि 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में भारत को पराजय का समाना करना पड़ा था। अंग्रेजों के 'अमानुसिक अत्याचारों से यह संग्राम दबा जरूर दिया गया था परंतु यही स्वतत्रंता देवी तक पहुंचाने वाला मार्ग भी बन गया था।'[2] 1857 की क्रांति और उसकी असफलता ने भारतीय जनमानस की आँखें खोल दी थी कि हम क्या हैं, हम क्यों गुलाम हैं और हमारी मुक्ति का मार्ग क्या है? ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्राथना समाज, तत्वबोधिनी सभा, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी संस्थाओं के माध्यम से देश में सामाजिक,सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, बौद्धिक, ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में एक नई चेतना का प्रदुर्भाव हुआ था। एक ओर अंग्रेजों की दमनात्मक नीति और शोषण तेज हो रहा था, तो स्वाधीनता आन्दोलन क्रांति, त्याग, बलिदान और आत्मोत्सर्ग की राह पर बढ़ रहा था। हिन्दी कविता ने भी स्वाधीनता आन्दोलन में पूरे जोश और उत्साह के साथ क्रांतिकारी भावनाओं को उद्वेलित करने वाली गजलों, कविताओं, मुक्तक काव्य, खण्ड काव्य व प्रबंध काव्यों की रचनाएं की। भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद व छायावादोत्तर युग में राष्ट्रीय भावनाओं को व्यक्त करने वाले असंख्य कवियों की असंख्य कविताएं आज भी राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करने में समर्थ है। इन कविताओं में देश भक्ति का सौरभ महकता है।

भारतेन्दु युग के कवियों ने परंपरागत संकुचित राष्ट्रीय भावना से उपर उठकर भारत के गौरवशाली अतीत, वर्तमान की दुर्दशा का चित्रण, अंग्रेज सत्ता के प्रति नफरत फैलाकर समाज सुधार तथा आत्मगौरव का भाव जगाने का कार्य किया। भारतेन्दु अंग्रेजों की शोषण नीति के प्रति व्यंग्य करते हुए लिखते हैं– भीतर भीतर सब रस चूसै, हंसि हंसि के तन–मन धन मूसै। जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखी साजन नहीं अंगरेज।[3]

भारतेन्दु युग के कवियों–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (विजयिनी विजय वैजयंति), राधाचरण गोस्वामी (हमारो उत्तम भारत देश), बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन (धन्य भूमि भारत सब रतननि की उपजावनि, हार्दिक हर्षादर्श,आनन्द अरूणोदय), प्रतापनायण मिश्र (महापर्व, नया संवत),राधाकृष्णदास (भारत बारहमाषा, विनय) ने कविताओं में देश–भक्ति और राष्ट्रीय चेतना की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की है। इन कविताओं में कवियों ने देश की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी कारणों की व्याख्या, देशवासियों में राष्ट्रीय भावना के बीज वपन करने, अतीत के गौरवशाली व प्रेरणादायी प्रसंगों द्वारा पुनर्जागरण का मंत्र दिया। वास्तव में भारत जब सभी क्षेत्रों में परतंत्र होकर हीन दशा में आँसू बहा रहा था, उस समय भारत की विशाल भूमि, अतीत की समृद्धि और गौरव–गाथाओं द्वारा ये कवि देश को नवीन चेतना प्रदान कर रहे थे।[4] अंग्रेजों ने भारत को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि बर्बाद कर दिया था। अंग्रेजों ने भारत को हर क्षेत्र में बर्बादी के कगार पर पहुंचाया था। वास्तव में भारत में बिटिश शासन का इतिहास आद्यंत आर्थिक शोषण की क्रूर एवं ह्नदय द्रावक करूण–कथा है। दो शताब्दियों के अपने शासन–काल में अंग्रेजों ने भारत को एक ऐसी गरीबी और तबाही दी है कि जिसकी तुलना संसार में किसी मुल्क से नहीं की जा सकती।[5] चारों ओर निराशा, उत्साहीनता, आलस्य, दिशाहीनता, शोषण, अत्याचार, भय और आतंक का ही साम्राज्य दिखाई देता था। भारतेन्द्र ने भारत दुदर्शा में इसका सटीक अंकन किया है–रोवहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई/हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।/सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनों/ सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो/सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो/सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनों/ अब सबके पीछे सोई परत लखाई। हा हा! भरत दुर्दशा देखी न जाई।[6] नाटक में भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र लिखते हैं कि हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इसके उठने की आशा नहीं। सच जो जानबूढकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? लेकिन भारतेन्द्र जाग्रति का संदेश देते हु लिखते हें कि' जागो जागो रे भाई। सोअत निसि बैस गँवाई जागो जागो रे भाई।। निसि की कौन कहै दिन बित्यो काल राति चलि आई।[7] इस युग के कवियों ने देखा कि 'जिस देश में कभी सोना बरसता था, आज उसी देश के लोग रोटी के टुकड़ों के लिए तरस रहे हैं। 'देश की कृषि और उद्योग शासक–वर्ग के शोषणपरक नीति से नष्ट हो रहे हैं। ऐसी स्थिति को देखकर इन कवियों ने इस पतन के प्रति अपना दर्द और क्षोभ व्यक्त किया है।''[8] प्रताप नारायण मिश्र व्यक्त करते हैं कि– तबहिं लख्यो जँह रह्यो एक दिन कंचन बरसत, तहँ चौथाई जन रूखी रोटी को तरसत/जहाँ कृषि, वाणिज्य, शिल्प, सेवा सब याहीं, देसिन के हित कछू तत्व कहुँ कैसेहु नाहीं।[9] यत्र–तत्र राजभक्ति के दर्शन होते हुई भी इस युग के कवियों की कविताओं में उच्च कोटि की देश भक्ति की अभिव्यक्ति हुई है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि– नवीन–विचारधारा के बीच भारतेन्दु की वाणी का सबसे ऊंचा स्वर देश–भक्ति का था। नीलदेवी, भारत दुर्दशा आदि नाटकों के भीतर आयी हुई कतिवाओं में देश–दशा की जो मार्मिक व्यंजना हुई है, वह तो है ही; बहुत–सी स्वतंत्र कविताएं भी उन्होंने लिखी, जिसमें कहीं देश की अतीत गौरव गाथा का गर्व, कहीं वर्तमान अधोगति की क्षोभ–भरी वेदना, कहीं भविष्य की भावना से जगी हुई चिन्ता आदि अनेक पुनीत भावों का संचार पाया जाता है।''[10] भारतेन्दु युग के कवियों ने राष्ट्र उद्धार के लिए धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देते हुए ईश्वर से भी देशोद्धार की कामना की। यथा– 'सभी धर्म के वही सत्य सिद्धांत न और बिचारो' कहकर प्रेमघन ने धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो' कह कर जातीयता, राष्ट्रीयता और भक्ति भावना को एक कर दिया तो प्रताप नारायण मिश्र ने 'हम आरत भारतवासिन पै अब दीनदयाल दया करिए' ईश्वर भक्ति की परंपरा को मोड़कर देशानुराग का परिचय दिया है।

द्विवेदी युग में देश के लिए त्याग, बलिदान, उत्सर्ग, समाज और राष्ट्र की उन्नति की भावना और प्रेरणा के लिए कविता प्रमुख माध्यम बन गई थी। प्रखर एवं उन्मुक्त राष्ट्रीय चेतना इस काल की सर्वप्रमुख प्रवृत्ति है। द्विवेदी युग में नाथूराम शर्मा 'शंकर', श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रायदेवी प्रसाद पूर्ण, रामचरित उपाध्याय, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, मैथिलीशरण गुप्त, राम नरेश त्रिपाठी आदि कवियों ने देश की एकता, अखण्डता, स्वाधीनता, स्वतंत्रता और उत्थान के लिए राष्ट्रीय भावना से युक्त उत्कृष्ट कविताओं की रचना की। इस काल में भारत के सांस्कृतिक गौरव का महिमा गान, पौराणिक एवं एतिहासिक वृत्तों का प्रासंगिक पुनर्राख्यान कर कवियों ने देश की हताश और निराश जनता में गौरव और स्वाभिमान का भाव जाग्रत कर अंग्रेज सत्ता के विरूद्ध खड़ा होने का साहस भरा था। कवियों ने वंदना गीत, जागरण गीत, अभियान गीत, क्रांति एवं बलिदान गीतों में देश–भक्ति की हुंकार से देशवासियों विशेषकर युवाओं में आत्मोत्सर्ग और आक्रोश का भाव जगाया। रामनरेश त्रिपाठी की यह कविता जिसमें युवा भावना का क्रुद्ध रूप अंकित है–क्रुद्ध सिंह–सम निकल प्रकट कर/अतुलित भुजबल विषम पराक्रम/युद्ध–भूमि में भी वे वैरी का/दर्प दलन कर लेते हैं हम/या स्वतंत्रता की वैदी पर, कर देते हैं प्राण निछावर।[11] कवियों ने भारत की वन्दना माँ और भवानी के रूप में की। देश का भव्य रूप अंकित करते हुए उसके विश्व–व्यापी रूप का उत्कर्षपूर्ण चित्र निरूपित किया है। देश के उन वीरों का स्मरण किया गया, जिन्होंने स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए सर्वस्व बलिदान किया था। इस प्रकार के चित्र सर्वाधिक मात्रा में मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में अंकित हुए हैं। उनके काव्य में राष्ट्र के प्रति निष्ठा, स्वदेशी जीवन पद्धति के प्रति आसक्ति, देश के प्रति सम्मान और राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति आस्था व्यक्त की गई है।[12] 'मंगलघट' में मातृभूमि का भव्य एवं गौरवशाली चित्र अंकित करते हुए वे लिखते हैं कि 'नीलांबर परिधान हरित पट पर सुन्दर है/सूर्य, चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है/नदिया प्रेम प्रवाह फूल तारे मण्डल है/ बंदीजन खग–वृन्द शेष–फन सिंहासन है/करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेश की/हे मातृभूमि! तू सत्य ही

सगुण मूर्ति सर्वेश की।[13] मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' कदाचित् राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति की सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना है जिसमें उन्होंने देश की वर्तमान अवनति और अधोगति को अंकित कर अपने क्षोभ को प्रकट किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि इसमें वह संजीवनी शक्ति है जिसकी प्राप्ति हिन्दी के और किसी भी काव्य में नहीं हो सकती। इससे हम लोगों की मृतप्रायः नसों में शक्ति का संचार होता है, क्योंकि हम क्या थे और अब क्या हैं, इसका मूर्तिमान चित्र इसमें देखने को मिलता है।'[14] भारत भारती की राष्ट्रीय चेतना के प्रभाव से देश के सैकड़ों नौजवान स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े तथा अंग्रेजों की दमनात्मक नीति का विरोध करते हुए जेल यात्राओं तक पहुंचे। स्वयं गुप्त जी ने भारत भारती की प्रस्तावना में लिखा है कि यह बात मानी हुई है कि भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बड़ा भारी अन्तर है। अन्तर न कहकर इसे वैपरीत्य कहना चाहिए। एक वह समय था कि यह देश विद्या, कला, कौशल और सभ्यता में संसार का शिरोमणि था और एक समय है कि इन्हीं बातों का इसमें शोचनीय अभाव हो गया है। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी वही आज पराया मुँह ताक रही है! ठीक है, जिसका जैसा उत्थान, उसका वैसा ही पतन! परन्तु क्या हम लोग सदा अवनति में ही पड़े रहेंगे?...क्या हमारी सामाजिक अवस्था इतनी बिगड़ गई है कि वह सुधारी ही नहीं जा सकती? क्या सचमुच हमारी यह निद्रा चिरनिद्रा है? क्या हमारा रोग ऐसा असाध्य हो गया है कि उसकी कोई चिकित्सा ही नहीं? संसार में ऐसा कोई भी काम नहीं जो सचमुच उद्योग से सिद्ध न हो सके। परन्तु उद्योग के लिए उत्साह की आवश्यकता है। बिना उत्साह के उद्योग नहीं हो सकता। इसी उत्साह को, इसी मानसिक वेग को उत्तेजित करने के लिए कविता एक उत्तम साधन है।' वास्तव में हिन्दी कवियों ने गुप्त जी की इस धारणा को अपनी कविताओं के माध्यम से साकार किया। वस्तुतः यह हिन्दी कविता में क्रांतिकारी प्रवृत्तियों का यौवन काल था।'[15] कवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने देश भक्त वीरों को देश की स्वतंत्रता के लिए, क्रांति और बलिदान के लिए प्रेरित करते हुए बलिदान–गान कविता में लिखा है कि– देश–भक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा/प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा। (शंकर सर्वस्व)। इस युग के कवियों ने कवियों ने भारत की गुलामी व बदहाली के मूल कारकों–आलस, उद्यमहीनता, फूट, खुदगर्जी, मिथ्या, कुलीनता आदि अभिशापों के प्रति नफरत तथा उनसे उभरने के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से प्रेरणा दी है। राय देवीप्रसाद पूर्ण ने अपनी कविता में लिखा है कि – भरतखण्ड का हाल जरा देखो है कैसा/आलस का जंजाल जरा देखो है कैसा/जरा फूट की दशा खोलकर आँखें देखो/खुदगर्जी का नशा खोलकर आँखे देखो/ है शेखी दौलत की कहीं, बल का कहीं गुमान है/है खानदान का मद कहीं, कहीं नाम का ध्यान है।[16] इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यह युग न केवल भारत की राजनीति में अंग्रेजों की दासता से मुक्ति क्रांतिकारी युग था अपितु कविता भी यह क्रांति आग उगल रही थी।

छायावादी एवं छायावादोत्तर काल की हिन्दी कविता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति हुई है। इस युग में 'एक ओर तो कवियों ने भारत की आन्तरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने के लिए देश की आजादी का आह्वान किया वहीं दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी।'[17] इस युग में माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त, निराला, जयशंकर प्रसाद, उदयशंकर भट्ट, रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना भरने एवं भारत की समृद्धि के लिए जनमानस को प्रेरित किया। इन कवियों में से ऐसे भी है जिन्होंने आजादी की लड़ाई में स्वयं ने सक्रिय भाग लिया। इसलिए इनकी कविता में अनुभूति की सच्चाई, आवेश और ताजगी है। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कैदी और कोकिला' कविता में अपनी अनुभूति को ही एक उच्चतर और लोक–सामान्य भावभूमि के स्तर पर व्यक्त किया है। यथा –क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना/ हथकड़ियां क्या? यह ब्रिटिश राज्य का गहना/ कोल्हू की चर्रक चूं? जीवन की तान/मिट्टी पर लिखे अंगुलियों ने क्या गान?/हूं मोट खींचता लगा पेट पर जूआ/खाली करता हूं ब्रिटिश अकड़ का कूआ।[18] माखनलाल चतुर्वेदी मूलतः क्रांतिकारी थे।कृराष्ट्रीय कार्य के लिए उन्होंने प्रथम, क्रांति का रास्ता अपनाया और इस रास्ते पर दूर तक चले रहे।[19] वे क्रांति और बलिदान की भावना व्यक्त करते हुए लिखते है कि – तीस करोड़ धड़ों पर गर्वित/उठे तने ये सिर हैं/तुम संकेत करो कि हथेली पर/शत–शत हाजिर है।'[20] रामधारी सिंह दिनकर की वीर रस भरी क्रांति की आग उगलती कविताएं देश–भक्त वीरों को उद्वेलित करने वाली है। वे मानकर चलते थे कि यह धैर्य और विश्वास का समय नहीं, देश की स्वाधीनता के लिए अब धैर्य की नही, युद्ध और क्रांति की आवश्यकता हैं। वे अपनी कविता के माध्यम से वीर रस को निष्पन्न कर पराधीन देश के सुप्त सिंहों को जगाते हैं। उनके वीर रस पूर्ण वर्णनों से प्रभावित हो देश में अंगड़ाई आ जाती है।'[21] रेणुका में वे लिखते हैः– रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर/पर, फिरा हमें गाण्डीव–गदा, लौटा दे अर्जन, भीम वीर।...तू मौन त्याग, कर सिंहनाद/रे तपी आज तप का न काल नवयुग–शंखध्वनि जगा रही/तू जाग, जाग मेरे विशाल।[22] वे अपनी कविता को 'क्रांति–धात्रि' मानते हैं। 'कस्मैदेवाय' काव्य द्वारा कवि उस ज्वाला को सुलगाना चाहता है जो शोषण और अत्याचार को भस्मसात कर दे। यथा–'क्रांति–धात्रि कविते! जगे, उठ अंबर में आग लगा दे/पतन, पाप, पाखण्ड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।[23] रेणुका के प्रारंभिक कविता 'मंगल आह्वान' में ही श्रृंगी फूंक कर सोए हुए जनमानस को जगाने का काम कर अपनी स्वाधीन चेतना का प्रमाण देते हैं। यथा– दो आदेश फूँक दूँ श्रृंगी, उठे प्रभाती राग महान/तीनों काल ध्वनित हों स्वर में, जागे सुप्त भुवन के प्राण/गत विभूति भावि की आशा, ले युग धर्म पुकार उठे/सिंहों की घन–अंध गुहा में, जागृत की हुंकार उठे

(रेणुका पृ. ख,ग)। वास्तव में दिनकर का काव्य इस युग में क्रांति चेता कविता का प्रतिनिधित्व कर रहा था। रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है कि हमारे क्रांति युग का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व कविता में, इस समय दिनकर कर रहा है। क्रांतिवादी को जिन–जिन ह्रदय–मंथनों से गुजरना होता है, दिनकर की कविता उनकी सच्ची तस्वीर है।[24] खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' जैसी ओजपूर्ण कविताओं की रचना करने वाली प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने गीतों में युवकों को स्वतंत्रता के लिए मर मिटने का आह्वान किया है। वे बहिन के रूप में अपने देश के भाइयों को चुनौती देती हुई कहती है कि–आते हो भाई! पुनः पूछती हूँ–विषमता के बंधन की है लाज तुमको?/तो बंदी बनो, देखो बंधन है कैसा, चुनौती यह राखी की है आज तुमको।[25]

जयशंकर प्रसाद ने 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' और 'हिमाद्रि' जैसी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति की है। 'महाराणा का महत्व' में वे जातीय गौरव की अभिव्यक्ति करते हुए लिखते हैं कि–कहो कौन है? आर्य जाति के तेज–सा/देश भक्त, जननी का सच्चा पुत्र है,/भारतवासी! नाम बताना पड़ेगा/मसि मुख में ले अहो लेखनी क्या लिखे!/उस पवित्र प्रातः स्मरणीय सुनाम को/नहीं, नहीं होगी पवित्र यह लेखनी/लिखकर स्वर्णाक्षर में नाम 'प्रताप' का।[26] 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए' वाली प्रसिद्ध काव्य पंक्ति के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविता के माध्यम से देश के नव युवकों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर मर मिटने के लिए प्रेरित किया है–बलिवेदी, सखे प्रज्वलित मांग रही ईंधन क्षण– क्षण/आओ युवक, लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन/भस्मसात हो जाने दो ये प्रलय उमंगे जीवन की/अरे सुलगने दो बलिवेदी, चढ़ने दो बलि जीवन की।[27] इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिन्दी कविता ने देश की आजादी में अपना जो योगदान और भूमिका निभाई वह किसी भी राष्ट्रीय नायक या योद्धा से कम नहीं हैं। कवि स्वयं राष्ट्रीय सैनिक थे। इस कविता ने देश की सुप्त नसों में क्रांति की ज्वाला और देश के प्रति समर्पित होने की भावना का निरंतर देश वासियों में पोषण किया। आज देश स्वतंत्र है, पर राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय हितों को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखने की चुनौती बराबर बनी हुई है। देश में भावनात्मक एकता व राष्ट्रीय भावना के लिए कविता का हमेशा महत्व कायम रहेगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है हिन्दी की राष्ट्रीय चेतना युक्त कविता जिन प्रवृत्तियों को लेकर चली उनमें – अतीत का गौरव गान, वर्तमान की दुर्दशा पर क्षोभ, जाग्रति और उद्यमशीलता का संदेश, अंग्रेजी शोषण और अत्याचार पर प्रहार, राष्ट्रीय एकता और उत्थान का संदेश, देशानुराग और क्रांति की अभिव्यक्ति, अंग्रेजी सत्ता के प्रति विद्रोह और देश के प्रति आत्मबलिदान, स्वदेशी और स्वतंत्रता की प्रबल आकांक्षा, देशोत्थान प्रमुख है। इस कविता में समाज को बदलने का प्रलयंकारी उद्घोष है। ओज, शक्ति और स्फूर्ति का भव्य रूप इस कविता के भाव पक्ष का प्राण तत्व है। हिन्दी कवियों ने देश के स्वाधीनता आन्दोलन में क्रांति–धात्रि कविता के माध्यम से सक्रिय सहभागिता निभाई तथा देश के जनमानस में आत्म विश्वास, चेतना, जाग्रति तथा स्वाधीनता की प्रेरणा देकर अहम् भूमिका निभाई। आज देश के सामने आन्तरिक सुरक्षा और बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से चुनौतियां कम नही है। भाषायी अलगाववाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, शोषण और विषमता प्रान्तवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, वर्गवाद, धार्मिक कट्टरता आदि ऐसी चुनौतियां है जो भारत राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा, एकता, अखण्डता और समृद्धि के लिए घातक है। राष्ट्रीय काव्य राष्ट्रीय चेतना का वाहक काव्य होता है। वह राष्ट्रीय जनमानस में राष्ट्र के प्रति समर्पण की शक्ति, ओज और स्फूर्ति का भाव पैदा करता है। 'यह हमारे कवियों का कर्त्तव्य है कि जन मानस में राष्ट्रीय भावों का स्फुरण करके उन्हें नव–निर्माण के लिए प्रेरित करें।[28] समग्रतः कहा जा सकता है कि हिन्दी कविता की राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति की परंपरा अत्यंत समृद्ध है। अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध विद्रोह और क्रांति तथा देश के लिए त्याग व बलिदान की भावना जाग्रत कर स्वाधीनता की लड़ाई में एक जुट होकर लड़ने हेतु उत्साह और आत्मोत्सर्ग का भाव पैदा करने में कविता की राष्ट्रीय चेतना का विशिष्ट योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *प्रसाद के कहानी–साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना के आयामः डॉ.अशोक कुमार झा, गौतम बुक कम्पनी राजापार्क जयपुर, प्र.सं. 2011 पृसं. 57–58*
2. *राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कलाः डॉ. शेखर चन्द्र जैन, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर प्रथम सं.1973 पृ.सं.8*
3. *भारतेन्दु ग्रंथावली : भारतेन्दु ग्रंथावली, भाग–2 पृ. सं. 811*
4. *राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कलाः डॉ. शेखरचन्द्र जैन, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर प्र.सं. 1973 पृ.सं.18*
5. *प्रेमचन्द और गांधी : रामदीन गुप्त एम.ए.,हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली–6 प्रथम सं.1961 पृसं.124*
6. *भारत दुदर्शा : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पंचशील प्रकाशन, चौड़ा रास्ता जयपुर प्र.सं.2006 पृ.सं. 41*
7. *भारत दुदर्शा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पंचशील प्रकाशन, चौड़ा रास्ता जयपुर प्र.सं.2006 पृसं.60*
8. *राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कलाः डॉ. शेखरचन्द्र जैन, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर प्र.सं. 1973 पृ.सं.18*
9. *कविता कौमुदीः प्रतापनारायण मिश्र, (क्रंदन) पं.स.65*
10. *हिन्दी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ.सं. 542*
11. *स्वपनः रामनरेश त्रिपाठी पृ.सं. 22*
12. *प्रसाद के कहानी –साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना के आयामःडॉ.अशोक कुमार झा, गौतम बुक कम्पनी राजापार्क जयपुर प्र.सं.2011प पृ.सं. 64*
13. *मंगलघटः मैथिलीशरण गुप्त, पृ.सं. 9*
14. *सरस्वती अगस्त, 1914, सं.महावीर प्रसाद द्विवेदी*

15. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कलाः डॉ. शेखरचन्द्र जैन, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर प्र.सं. 1973 पृ.सं.20
16. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र सं. मयूर मेपर बैक्स 24वां सं. 1997 पृ.स.490
17. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र सं., मयूर मेपर बैक्स 24वां सं. 1997 पृ.सं.533
18. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र सं.,मयूर मेपर बैक्स 24वां सं. 1997 पृ. सं. 533
19. माखनलाल चतुर्वेदी और वि. दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना : डॉ सुभाष महाले, चन्द्रलोक प्रकाशन, किदवई नगर कानपुर सं. 1997, पृ.सं.143
20. माखनलाल चतुर्वेदीः युगचारण पृ.सं.50
21. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कलाः डॉ. शेखरचन्द्र जैन, जयपुर पुस्तक सदन, जयपुर प्र.सं. 1973 पृ.सं 142
22. रेणुका (हिमालय): रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.7
23. रेणुका– कस्मै देवायः रामधारी सिंह दिनकरः पृ.32
24. रामधारी सिंह दिनकरः हुंकार की भूमिका (क्रांति का कवि): रामवृक्ष बेनीपुरी पृ.2
25. साहित्यिक निबंधः डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, पृ.स.590, लोक भारती इलाहबाद 13वां सं.1996
26. महाराणा का महत्वः जयशंकर प्रसाद, पृ.सं.9
27. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र सं., मयूर पेपर बैक 24वां सं.1996, पृ.सं.536
28. साहित्यिक निबंधः डॉ.गणपतिचन्द्र गुप्त, पृ.सं. 602, लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद, नवम् संस्करण 1987